आई वी. एल पी. प्रपत्र 7
अक्टूबर, 2002

मरू क्षेत्र में सूखाकाल में उपयुक्त पशु प्रबन्ध

प्रताप नारायण, सतीश कौशिश, टी.के. भाटी, बी.के. माथुर एवं एम. पाटीदार
केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर-342003

मरू क्षेत्र इस वर्ष भीषण सूखे की चपेट में है। पीने के पानी और हरे चारे के अभाव में पशुधन जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तम्भ है, एक भीषण दौर से गुजर रहा है। इस दौरान मवेशी का पेट भरने के लिए मुख्य आहार रेशेदार सूखी कड़बी, पुआल या खाखला ही होता है जिससे पशु में प्रोटीन की भारी कमी हो जाती है। कुपोषण से पशु कमजोर हो जाता है, उसमें खून की कमी हो जाती है और उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है। पशु कई बीमारियों की चपेट में आ जाता है। पशुओं को इससे बचाने के लिये निम्न तकनीकें रामबाण सिद्ध होंगी।

भूसे का यूरिया उपचार:

भूसे को यूरिया से उपचारित कर पौष्टिक बनाने के लिये एक सौ किंलो सूखी कुतर, पुआल या खाखले को ३ किलो यूरिया व ५० लीटर पानी से उपचारित करते हैं। एक क्विंटल सूखे चारे को किसी साफ स्थान पर फैला दें फिर 50 लीटर साफ पानी में यूरिया घोल समान रूप से छिड़कें। इसके बाद चारे को पावों से अच्छी तरह से दबायें जिससे उस में मौजूद हवा निकल जाये एवं यूरिया इसमें अच्छी प्रकार मिल जाये। तत्पश्चात् इस चारे को मेंणिये (प्लास्टिक शीट) से ढक दें। मेंणिये के किनारों पर 4-5 बड़े-बड़े पत्थर रख कर दबा दें जिससे अन्दर की गैस बाहर न निकल सके। इस चारे को 15 से 20 दिन के पश्चात् पशुओं को खिलाना शुरू किया जा सकता है। शुरू में इसकी थोड़ी-थोड़ी मात्रा सूखे चारे में मिलाकर खिलायें। यूरिया उपचार से चारे की पौष्टिकता एवं पाचकता बढ़ जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 1.5 प्रतिशत से बढ़कर 8 प्रतिशत तक हो जाती है जो पशु को प्रोटीन कुपोषण से बचाती है। इस चारे का उपयोग दुधारू पशुओं एवं बछड़ों/बछड़ियों के लिये अत्यन्त लाभदायक है। सूखे चारे में मसूर का भूसा, मूंगफली की खल या एक चौथाई तक तुम्बे की खल मिलाने से पोषक तत्वओं की कमी दूर की जा सकती है। पुआल व कड़बी को कुतर कर देने से यह खराब कम होती है और पाचकता भी बढ़ती है।

पशु आहार बट्टिका:

काजरी द्वारा विकसित या बाजार में उपलब्ध पशु आहार बट्टिका पूरक पौष्टिक आहार के रूप में मवेशियों में आवश्यक तत्व तथा प्रोटीन की कमी दूर करती है। एक बट्टिका पशु को लगभग एक सप्ताह तक चाटने के काम आती है। पशुओं की ढाँण में मिनरल ईंट व साधारण लवण रखने से पाचन क्रिया व लवणों की पूर्ति ठीक रहती है।

CENTRAL ARID ZONE RESEARCH INSTITUTE
LIBRARY

विटामिन "ए" के टीके:

सूखाकाल में हरे चारे की कमी से पशुओं में विटामीन "ए" की कमी के लक्षण आ जाते हैं जैसे पशु की चमड़ी रुखी व खुरदरी होना, आँखों पर सफेद फूला आना और नवजात बछड़े, मेंमनें अंधे पैदा होना। उपचार के लिए विटामिन "ए" का टीका लगवायें।

पशुओं का स्वास्थ्य:

सूखाकाल में कुपोषण से पीड़ित पशुओं में होने वाली बीमारियों से बचाव के लिए समय-समय पर टीका लगवायें। टीकाकरण के लिये पशुपालन विभाग के जिला मुख्यालय व तहसील मुख्यालय में नोडल अधिकारी से सम्पर्क करें। पशुपालक निष्क्रमण से पहले निकटतम पशु चिकित्सा संस्थान से सम्पर्क साधकर गन्तव्य स्थान के बारे में जानकारी देवें व टीकाकरण करवा कर प्रस्थान करें (सारिणी -१)।

बाह्य व आंतरिक परजीवियों से सुरक्षा:

बाह्य परजीवियों के लिए पशुओं पर परजीवी नाशक दवाओं का, जैसे तरल सायप्रमिथरीन 10% W/V दवा एक लीटर पानी में 1-2 मि.ली. के हिसाब से मिलाकर सुबह के समय पशु पर छिड़काव (Spray) करें। पशु के बाड़े में ऐन्डोसल्फॉन 4% पाउडर छिड़कें। यह दवा जहरीली होती है अत: आँख तथा मुँह में न जाने दें व हाथ साबुन

से धो लें। उपचार एक सप्ताह बाद दुबारा करें। आंतरिक परजीवियों के लिये कम से कम वर्ष में दो बार ऐलबेन्डाज़ोल दवा पिलायें। यह बाजार में कई नामों से उपलब्ध है व खुराक की मात्रा उसी पर लिखी रहती है।

चारा उत्पादन:

सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में या देर से अथवा जाड़े की वर्षा आने पर हरा चारा उगाने का हर सम्भव प्रयास करें, जिसकी तकनीकीयाँ सारिणी-२ में दी हैं।

विशेष ध्यान रखने योग्य बातें :

- बरसीम एवं रिजका के बीजों को बोने से पूर्व राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।
- बरसीम, जौं एवं जई के साथ दो किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से जापानी सरसों या चाइनीज कैबेज के बीज मिलाकर बोने से पहली कटाई में शीघ्र एवं अधिक चारा मिलता है।
- जौं की खेती क्षारीय व लवणीय भूमियों पर या खारे पानी से भी सफलतापूर्वक की जा सकती है।
- ज्वार, बाजरा एवं मक्का के साथ चंवला या ज्वार के बीजों को मिलाकर बुवाई करने से चारे की गुणवत्ता बढ़ जाती है।
- अच्छे चारे की फसल के लिए ८-१० टन अच्छी गली सड़ी गोबर की खाद को बुवाई से पहले खेत में मिलावें और आवश्यकतानुसार उर्वरकों का भी प्रयोग करें।
- गर्मियों में 10-12 दिन तथा सर्दियों में 15-20 दिन के अन्तराल पर सम्भवत: सिंचाई करें।
- ज्वार को बोने के 45-50 दिन बाद काटना चाहिये तथा सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाने से पशुओं पर विषैला प्रभाव नहीं पड़ता।

सारिणी-१: टीकाकरण

मूल्य	पशु	टीके का नाम	टीकाकरण समय	मात्रा (मि.ली.)
निशुल्क	गाय व	गलघोटू (H.S.V.)	मानसून पूर्व	5
	भैंस	लगड़ा बुखार (B.Q.V.)	मानसून पूर्व	5
25 पैसे	भेड़ व	फड़किया (E.T.V.)	(क) मैमनों में अप्रैल-मई व सितम्बर-अक्टूबर	1-2
प्रति पशु	बकरी		(ख) वयस्कों में जुलाई-जनवरी	2.5
25 पैसे				

सारिणी-२: चारा उत्पादन की तकनीकियाँ

चारे की फसलें	किस्में	बुवाई का समय	बीज दर कि.ग्रा/है.	उर्वरक कि.ग्रा प्रति है. नत्रजन	फॉस्फोरस	चारा प्राप्ति का समय
रिजका	आनन्द-2, टाईप-8,9,लोकल	अक्टूबर-नवम्बर	15-20	20	80	दिसम्बर से जुलाई
बरसीम	पूसा जायन्ट, वरदान,टी-780, टी-678 एस	अक्टूबर	25-30	20	60	नवम्बर के अन्त से अप्रैल तक
जई	केन्ट, यू.पी.ओ 94, हरियाणा जई	नवम्बर	100	60	30-40	जनवरी से मध्य मार्च तक
जौं	आर.डी. 2052, अरन्डी 2035,	नवम्बर	100	60	40	जनवरी से मार्च तक
ज्वार	राज चरी 1,2, एम.पी. चरी, पूसा चरी, लीलड़ी ज्वार, सी.एस.वी.15, सी.एस.एन. 13	मार्च-जुलाई	40	80	40	मई से अक्टूबर
बाजरा	राज. बाजरा, चरी-2, एल 74, के-599, रिजका बाजरी, एम.पी.171	मार्च-जुलाई	12	60	40	मई से अक्टूबर
मक्का	अफ्रीकन टाल, विजय,किसान, गंगा-5	मार्च-जुलाई	50-60	75	40	मई से नवम्बर
कूरा	स्थानीय	मार्च-जुलाई	6-7	40	20	मई से अक्टूबर

आभार:- लेखक संभागीय आयुक्त, संयुक्त निर्देशकों (पशुपालन एवं कृषि विभाग) के संबधित जानकारीयाँ उपलब्ध करवाने के लिये आभारी हैं।

प्रकाशन:

केन्द्रिय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर-३४२००३ (राजस्थान)